

पड़ोसी के अधिकार के बारे में इस्लाम का क्या कहना है ?

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "अल्लाह की क़सम ! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है, अल्लाह की क़सम ! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है, अल्लाह की क़सम ! वह व्यक्ति मोमिन नहीं है।" पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल ! यह बात आप किसके बारे में कह रहे हैं ? आपने उत्तर दिया : "जिसका पड़ोसी उसकी तकलीफ़ से सुरक्षित नहीं रहता।" [249] [सहीह बुखारी तथा सहीह मुस्लिम]

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "पड़ोसी को शुफ़आ का अधिकार (अर्थात् वह खरीदार पर ज़ोर डालकर पड़ोसी की संपत्ति खरीद सकता है) है। यदि पड़ोसी ग़ायब हो तो उसकी प्रतीक्षा की जाएगी, यदि उन दोनों का रास्ता एक हो।" [250] [मुसनद इमाम अहमद]

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "ऐ अबू झर ! जब शोरबा पकाओ, तो उसमें पानी ज्यादा डाल दो और पड़ोसियों का भी रुव्याल रख लो।" [251] [इसे इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है।]

अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- ने फ़रमाया है : "जिसके पास ज़मीन हो और वह उसे बेचना चाहता हो, तो (पहले) खरीदने का अवसर अपने पड़ोसी को दे।" [252] [यह हदीस सहीह है और सुनन इब्न-ए-माज़ा में मौजूद है।]

इस्लाम - प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से

Source: <https://islam.contact/qa/hi/show/95/>

Arabic Source: <https://islam.contact/qa/ar/show/95/>

Wednesday 11th of February 2026 09:22:18 PM